प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण में सहसम्बन्ध का अध्ययन

डॉ. महेन्द्र कुमार
सहायक आचार्य
शिक्षा संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय.,झाँसी

सारांश

प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण में सहसंबंध का अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान की परस्पर संबंध अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया। जनपद झांसी (तहसील झांसी एवं मऊरानीपुर) के कक्षा 10 के विद्यार्थियों को समष्टि के रूप में लिया गया। माध्यमिक शिक्षा परिषद से संबद्ध प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों का चयन सरल यादृच्छिक विधि से किया गया। शोध चर आत्मबोध से संबंधित आंकड़े एकत्रित करने के लिए आर. के. सारस्वत के मानकीकृत उपकरण (SCQ) एवं शोध चर विद्यालयी वातावरण के मापन हेतु के. एस. मिश्रा द्वारा निर्मित स्कूल एनवायरनमेंट इन्वेंटरी (SEI) का प्रयोग किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु पीयरसन सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया। शोध परिणामों में पाया कि प्राइवेट विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण में सार्थक सहसंबंध नहीं है अर्थात अत्यंत निम्न ऋणात्मक एवं निम्न धनात्मक सहसंबंध है। जिसका कारण विद्यालयों में छात्र–छात्राओं की अनुपस्थिति हो सकता है।

संकेत शब्द *– आत्मबोध, विद्यालयी वातावरण एवं विद्यार्थी।*

प्रस्तावना :–

बालक अपने जन्म के समय असहाय होता है अर्थात वह दूसरों की सहायता से जीवन की आवश्यकताओं को पूर्ण करता है, जो उसकी जीवनचार्य में वांछनीय परिवर्तन करती है यही वांछनीय परिवर्तन उसके सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक कल्याण करने में सहायता करता है।

शिक्षा के विभिन्न स्तरों में माध्यमिक स्तर का पाठ्यक्रम बालक की रुचि से संबंधित हो एवं विद्यालय वातावरण उसके जीवन एवं आवश्यकताओं से संबंधित हो। विद्यालय को एक महत्वपूर्ण संस्थान माना जाता है जिसके माध्यम से अधिगमकर्ता को सामाजिक जीवन के कौशल सिखाए जाते हैं अनेक स्थितियों में विद्यार्थी अपने विद्यालय में ऐसा वातावरण देखना चाहता है जैसा वातावरण उसे परिवार और परिचितों के साथ मिलता है। यही वातावरण उसके आत्म संप्रत्यय को विकसित करने में मदद करता है। विद्यालयों का मुख्य उद्देश्य शिक्षा प्रदान करने के साथ–साथ विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना होता है और यह तभी संभव है जबकि विद्यालयों में विद्यार्थियों के अनुकूल वातावरण हो।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :–

देश की प्रगति का मूल आधार उसकी भौतिक और मानवीय संपत्ति है। इनमें से भी मानवीय संपत्ति अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके बिना भौतिक संपत्ति का उपयोग संभव नहीं है। इसलिए जिस देश में मानवीय संपत्ति अधिक मजबूत होती है वह देश भी उत्कृष्ट होता है। इसलिए देश को मजबूत बनाने के लिए हमें मजबूत एवं स्वस्थ मानव संपदा की आवश्यकता है लेकिन वर्तमान में स्थिति विपरीत है। आज छात्रों के पास सोशल नेटवर्किंग साइट्स के लिए बहुत समय है लेकिन परिवार, समाज और विद्यालय के लिए समय नहीं है। तो क्या यह संभव है कि उनके आत्मबोध सोशल नेटवर्किंग साइट्स से सम्बन्धित हो रहे हैं या अब भी विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के आत्मबोध से सम्बन्धित है ?

अध्ययन के उद्देश्य :–

(i) प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्रों के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

(ii) प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्राओं के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

(i) प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्रों के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

(ii) प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्राओं के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

परिसीमन :–

प्रस्तुत शोध झाँसी जिले के तहसील –झाँसी एवं मऊरानीपुर के माध्यमिक स्तरीय ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में स्थित माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित रहा।

शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक शोध की परस्पर संबंध अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या :–

प्रस्तुत शोध में झांसी जनपद के माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तर–प्रदेश से सम्बद्ध प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में परिभाषित किया गया।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन :–

शोध अध्ययन में झाँसी जनपद की दो तहसीलों (झाँसी एवं मऊरानीपुर) से प्रथम स्तर स्तर पर पर प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों के चयन हेतु सोददेश्य पूर्ण न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया। द्वितीय स्तर पर प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों में से कक्षा 10वीं के 100 विद्यार्थियों (50 छात्र एवं 50 छात्राएं) का चयन साधारण यादृच्छिक विधि से किया गया।

अध्ययन के चर :–

प्रस्तुत शोध में प्रमुख रूप से दो चरों का प्रयोग (मापन) किया गया–

(i) आत्मबोध

(ii) विद्यालयी वातावरण

शोध उपकरण :–

(i) आत्मबोध के मापन हेतु– Self Concept Questionnaire (SCQ)–R.K.Saraswat एवं

(ii) विद्यालयी वातावरण के मापन हेतु– School Environmental Inventory (SEI)– Dr. K.S. Misra का प्रयोग किया गया

सांख्यिकी विधियाँ :–

प्रस्तुत शोध में परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु, मध्यमान, मानक विचलन एवं पियर्सन सहसम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया ।

आंकडों का विश्लेषण तथा व्याख्या :–

1. प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्रों के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन–

शून्य परिकल्पना– *"प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्रों के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण में सार्थक सम्बन्ध नहीं है।"*

प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्रों के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध को जानने के लिए दोनों के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक की गणना की गयी जिसको तालिका संख्या–1 में दर्शाया गया–

तालिका संख्या–1

प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्रों के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावल के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक मान

चर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मुक्तांश (df)	सह सम्बन्ध गुणांक	परिणाम
आत्मबोध	50	178.88	25.86	48	r =–0.030 अत्यन्त निम्न ऋणात्मक सहसम्बन्ध	.05 सार्थकता स्तर पर सारिणी मान =.273 परिणाम =असार्थक शून्य परिकल्पना –स्वीकृत
विद्यालयी वातावरण	50	179.26	20.07			

उपर्युक्त तालिका में आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण के सन्दर्भ में प्राप्त सांख्यिकीय मानों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि आत्मबोध तथा विद्यालयी वातावरण के प्राप्तांकों के मध्यमान तथा मानक विचलन के मानों में पर्याप्त अन्तर नहीं है। सहसम्बन्ध गुणांक (r) का मान – 0.030 प्राप्त हुआ। यह मान 48 मुक्तांश पर .05 सार्थकता के सारणी मान .273 से बहुत कम है जो कि .05 सार्थकता स्तर पर असार्थक है। उपर्युक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्रों के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है अर्थात अत्यंत निम्न ऋणात्मक सहसम्बन्ध है।

2. प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्राओं के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन–

शून्य परिकल्पना – *"प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्राओं के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण में सार्थक सम्बन्ध नहीं है।"*

प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्राओं के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध को जानने के लिए दोनों के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक की गणना की गयी जिसको तालिका संख्या –2 में दर्शाया गया–

तालिका संख्या–2

प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्राओं के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावल के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक मान–

चर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मुक्तांश (df)	सह सम्बन्ध गुणांक	परिणाम
आत्मबोध	50	177.78	24.44	48	r =0.245 निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध	.05 सार्थकता स्तर पर सारिणी मान = .273 परिणाम =असार्थक शून्य परिकल्पना–स्वीकृत
विद्यालयी वातावरण	50	177.66	29.53			

उपर्युक्त तालिका में आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण के सन्दर्भ में प्राप्त सांख्यिकीय मानों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि आत्मबोध तथा विद्यालयी वातावरण के प्राप्तांकों के मध्यमान तथा मानक विचलन के मानों में पर्याप्त अन्तर नहीं है। सहसम्बन्ध गुणांक (r) का मान 0.245 प्राप्त हुआ। यह मान 48 मुक्तांश पर .05 सार्थकता के सारणी मान .273 से कम है जो कि .05 सार्थकता स्तर पर असार्थक है। उपर्युक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्राओं के आत्मबोध तथा विद्यालयी वातावरण में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है अर्थात निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है।

शोध निष्कर्ष :–

1. **शून्य परिकल्पना–***"प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्रों के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण में सार्थक सम्बन्ध नहीं है।"* स्वीकृत होती है अर्थात प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्रों के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण में सार्थक सम्बन्ध नहीं है,जिसका कारण विद्यालयों में छात्रों की अनुपस्थिति हो सकता है। अर्थात विद्यालयी वातावरण में परिवर्तन होने पर उनके आत्मबोध में सार्थक परिवर्तन नहीं होता अर्थात छात्रों के विद्यालयी वातावरण का उनके आत्मबोध से सार्थक सम्बन्ध नहीं है। उक्त परिणामों की पुष्टि एवं प्रमाणिकता पाण्डेय,उर्मिला एवं तिवारी,संजीव कुमार (2017), यादव, रेखा(2017),सिंह,बलवान (2018) आदि के शोधों से होती है ।
2. **शून्य परिकल्पना–***"प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्राओं के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण में सार्थक सम्बन्ध नहीं है।"* स्वीकृत होती है अर्थात प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्राओं के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण में सार्थक सम्बन्ध नहीं है । जिसका कारण यह हो सकता है– वर्तमान में हमारे समाज की निर्भरता तकनीकि पर अधिक बढ़ रही है जिसमें मोबाईल सबसे अधिक सक्रिय संसाधन है यही कारण हो सकता है कि विद्यालयों में छात्रों की तरह छात्राओं की भी अनुपस्थिति बढ़ रही हो कहने का तात्पर्य यह है कि छात्रों की तरह ही छात्राओं के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण में सार्थक सम्बन्ध नहीं है । उक्त परिणामों की पुष्टि एवं प्रमाणिकता यादव, रेखा(2017),सिंह,बलवान (2018) आदि के शोधों से होती है।

सन्दर्भ सूची :–

अस्थाना, बी., एवं अस्थाना, एस. (2005). *मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन.* विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.

आर्य, एम. एल. (2014). *शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्धन.* आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ.

एल, पी. यू. (2012). *अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया.* लक्ष्मी पब्लिकेशन लि.113, गोल्डन हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली.

कौल, एल. (2005). *शैक्षिक अनुसन्धान की कार्यप्रणाली.* विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा.लि., दिल्ली.

पाण्डेय, यू., एवं तिवारी, एस. के. (2017). रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शालेय वातावरण का विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता पर प्रभाव का अध्ययन. *International Journal of Advanced Education and Research. 2*(2), 33-35. http://www.alleducationjournal.com/download/202/2-2-20-200.pdf

भटनागर, आर. पी., एवं अग्रवाल, वी. (2007). *शैक्षिक प्रशासन.* इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ.

माथुर, एस. एस. (2008). *शिक्षा मनोविज्ञान.* अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा.

यादव, आर. (2017). वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का उनके मूल्यों तथा शैक्षणिक उपलब्धि के सन्दर्भ में अध्ययन. *Epitome: International Journal of Multidisciplinary Research. 3*(5), Page-179-187. http://www.epitomejournals.com/VolumeArticles/FullTextPDF/271_Research_Paper.pdf

सिंह, बी. (2018). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का शैक्षिक निष्पति पर प्रभाव का अध्ययन. *Chetna International Educational journal. 2*(3), 235-242. http://echetana.com/wp-content/uploads/2018/04/31-Balwan-Singh.pdf

How to cite reference of this paper-

कुमार, एम. (2023). प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों के आत्मबोध एवं विद्यालयी वातावरण में सहसम्बन्ध का अध्ययन. *Educational Metamorphosis, 2*(2), 107-111.